



कवर स्टोरी
मुकेश पंड्या
feedback.ladki@
bombaysamachar.com

ताजेतरमां तमिण अभिनेता कम राजकारणी कमल हसनने जे नवो पक्ष स्थाप्यो छे तेणे आगामी यूट्यूबीओने ध्यानमां रापीने सात मुद्दानो अंक अजन्दा ज़ाहेर क्यो हतो. आमांनो अंक मुद्दो अे पण हतो के गुडिणीओने तेमना घरकाम बढल वेतन आपीने तेमना कामने अंक नवी ओणभाए आपवामां आवशे. आ ज़ाहेरत थरा पछी तो सोशियल मीडिया पर आनी तरडेणामां अने विरोधमां भूष ख्याओ थवा लागी हती.

ज़ोके, आ मुद्दो कंड नवो नथी. दायकाओ अगाऊ पण मडिलाओने घरकाम बाबते समाज अने देश तरडथी वेतनप्राप्त मान्यता मणे तेनी ख्याविचारण करवामां आवेली. १८३८मां जवाहरलाल नेहरु अने सुभाषचंद्र बोजाना वडपण लेडण नेशनल प्लानिंग कमिटीनी रचना थड हती. आ संस्थानी अंक सभकमिटीमां ते वपतनी बे ज़ाहरमान मडिला स्वातंत्र्यसेनानीअे लविच्यना भारतीय अर्थकारणमां मडिलाओ शुं भाग लजवी शके तेनो अडेवाल आय्यो हतो तेमां पण आ वेतननो मुद्दो उपाडवामां आय्यो हतो.

आ बे स्वातंत्र्यसेनानीओ हती लक्ष्मीबाइ रजवाडे अने मुद्दला साराभाई. दकतरनी विधा प्राप्त करी हती ते लक्ष्मीबाई मेजर जनरल अने तेनी पूर्व व्याखियरना राजा रही यूकेला सी. आर. रजवाडेमां धर्मपत्नी. तेमणे सरोजिनी नाथपुना प्रभापदे रयाथेली ओल छन्डिया वीमेन्स कॉन्फ्रन्स (अे. आड. १९६५. सी.)मां सक्ति सभ्य तरीके धरणां सामाजिक कार्यो क्यो हतां. कुटुंब नियोजनमां तेमो कड आऊडी हतां जेनो ते वपते अमुक लोकां अे विरोध पण क्यो हतो छतांय

छेले सुधी तेमणे पोतानो मत छोज्यो न हतो. स्वातंत्र्य बाड १८५०मां तेमणे युनाइटेड नेशनल्स एकोनोमिक अेन्ड सोशियल काउन्सिलमां भारतन्तु प्रतिनिधित्व पण क्यो हतुं.

बीअं स्वातंत्र्यसेनानी गुजरातना प्रख्यात अक्काश विज्ञानी विक्रम साराभाईनां अडेन मुद्दला साराभाई हतां. १८ वर्षनी नानी वधे कोअ्रेस सेवादणमां ज़ोदानार मडालमा गांधीनी अैतिहासिक दंडीक्यमां पण तेमणे भाग लीधो हतो. तेमणे आ समये ब्रिटिश मावसायानना अडिफ़रनी जुंभेश पण उपाडी हती. मीकानो काणो कायदे तोडवा बाबते ब्रिटिश सरकार तेमनी घरकड पण करेली. १८४६मां डेलायेल कोमी दुल्लड दरम्यान गांधीओने अतिसंवेदनशील विस्तार नोआपवेलीनी मुलाकात लीधी त्यारे तेओ पण गांधीओनी साथे हतां. आ अेवो समय हतो ज्यारे हिन्दू-मुस्लिम रमभाए तेनी पराकाष्ठा अे हतुं. आवा समयमां मडिलाओ अनेकोनी वासनानो भोग बनवानी संभावना हती. छतांय मुद्दला साराभाई कोड पण ज़ातना उर, अरे मृत्युना पण भय वगर गलीओमां शांतिनी अपील करतां करी रखां हतां. मात्र भारत ज नही, पाकिस्तानना नेताओने पण तेमनी हिंमतनां भूष वभाए क्यो हतां.

आ तो थड बेड मडिला स्वातंत्र्यसेनानीओ विशेनी थोडी ज़ाणकारीनी वातो, परंतु तेमणे गुडिणीओनी आर्थिक सध्वरता अंगे जे काम क्यो हतुं ते ज़ाएवा जेवुं छे. अगाऊ कहुं तेम नेशनल प्लानिंग कमिटीनी सभकमिटीमां यूट्यूथेली आ बे मडिलाओने १८४०मां अंक अडेवाल रज क्यो हतो जेमां लभवामां आय्युं हतुं

लाडकी

महिलाओंने घरकाम भाटे वेतन

आजादी पहलां पण बे महिला स्वातंत्र्यसेनानीअे आ मुद्दो उपाड्यो हतो

के स्त्रीओने घरनी जे पण आवक होय तेनो अमुक भाग मणवो ज़ोअे. उपरांत पतिनी कोड पण ज़ातनी मिलकतमां पण तेने भागीदार बनाववी ज़ोअे. अेमां कोड शंकांने स्थान ज नथी के वरेडु कार्योंनो वधु पडतो बोअे मडिलाओ ज उठावती होय छे. भास करीने मध्यमवर्ग जे पोताना वरे नोकर-नोकराणी रापी शकतो नथी त्यां तो घरनी मडिलाओ पर ज भार होय छे.

वीमेन्स रोल छन प्लान्ड एकोनोमी-ना शीर्षक लेडण लभायेल आ अडेवालमां आ बे मडिलाओने आगण लभ्युं हतुं के 'अमने अेवुं लागे छे के मडिलाओ जे घरकाम करी रही छे तेमने राज्य के पछी तेमना समाज तरडथी कोड मानपान नथी मणी रखां, तेमना आ कार्यने घरनी अडार करतां कार्यों करतां ओछा मडलवुं कदापि न समजवुं ज़ोअे. अेटलुं ज नही पण तेना आर्थिक वणतर विशे पण विचारवुं ज़ोअे.'

आ बनने मडिलाओने अेवी पण दलील करी हती के घरनी स्त्रीओ मात्र रसोई बनाववानुं के कपडां धोवानुं ज काम नथी करती, परंतु संतानोनुं पालन-पोषण अने तेमनामां संस्कार-विद्यानुं सींचन करवानी जवाबदारी पण निभावती होय छे. कमन्सिबे तेओ अशिक्षित होवाथी तेमना आ कार्यनुं योग्य मूल्यांकन नथी थयुं.

भारतमां अंक मान्यता छे के पुरुष अेड-विनर छे अने ते अडारथी कमाछने लावे छे अेटले तेने ज वधु मडलव अपावुं ज़ोअे. पण आपणे अे न भूलवुं ज़ोअे के मडिलाओ घर-संतानने पाणवामां जे श्रम उठावे छे ते न उठावे तो पुरुषो अडारमां कार्यों करवामां आटला

शक्तिमान थड शके? वणी दरेक बाबते पुरुष पर ज अवलंबित रहेवानी आ मनोदशा तेमने आर्थिक युवावी तरड दसडी ज़ड शके छे.

आ अडेवालनुं समापन करतां तेमणे लभ्युं हतुं के 'ज्यां सुधी घरकाम करती मडिलाओना कार्यने घरनी अडार करतां कार्यों जेटलुं मडलवुं अने उत्पादक नही समजवामां आवे अने जेम अडार काम करता पुरुषोने वेतन आपवामां आवे छे तेम गुडिणीओने पण तेमना कार्यनुं वणतर नही आपवामां आवे त्यां सुधी तेमना आ श्रमने कोड पण ज़ातनां मानसमान नथी मण्यो अेम ज ग़ाएरा.'

ज़ोके, ८० वर्ष पूर्व आ मडिला मडानुभावओने जे अडेवाल आय्यो हतो तेनी धणी अवगणना थड छे. आजे पण आ प्रश्नने उडेवतो कोड कायदे के व्यवस्था आपण समाजमां के देशमां जेवा नथी मणतां.

आजकाल अनेक ज़ातना सर्वे थय छे. तेमां पण घरनी अंडर लाइमां भार अने रातदिवस काम करती मडिलाओना व्यवसाय सामे मात्र 'गुडिणी' अेटलुं ज लभवामां आवे छे अने अडार काम करती मडिलाओना व्यवसाय सामे ज 'वर्किंग वुमन' अेम लभवामां आवे छे. ज़ाणे घरनी अंडर रहेती मडिलाओ तो कोड काम ज न करती होय.

समय आय्यो छे हवे आ ज़ातनी मान्यताओ बढलवानो. मडिला सशक्तीकरणना अभियान लेडण धणी स्त्रीओ आजे मानवामां न आवे तेवां क्षेत्रमां पोतानो पण मजबूत करी रही छे त्यारे पोतानी इरज समजती, घरनी अंडर रही प्रेमपूर्वक सधणां काम करती नारीना पण पण न लथेअे अने तेमनुं पण आत्मसन्मान जणवय ते जेवानी जवाबदारी सरकारनी अने आपण सहुनी छे.

कथा कोलाज
काजल ओजा - वैद्य
kajal.oja@
bombaysamachar.com

महाश्वेतादेवी: साहित्यना रस्ते समाजना भूण सुधीनो प्रवास

नाम : महाश्वेता देवी
स्थण : ज़डी ३०, राजदंगा मेठन रोड, सेक्टर अेफ़, ईस्ट कोलकाता
समय : डेअुआरी, २०१६
उमर : ८० वर्ष

“आदिवासीओना स्वतंत्रता संघर्षनी वात आपणे भारतना स्वतंत्रता माटेना संघर्ष साथे कडी जोडी शक्य ज नथी, अेनुं कारण अे छे के आपणे आदिवासीओने आपण देशना हिस्सा तरीके स्वीकारता ज नथी. भारतनी आजादीना साडा छ दायका पछी पण आदिवासीओनी स्वतंत्रता अने जौरव माटेनो संघर्ष पूरो थयो नथी. अे हज पण पोतानुं जंगल अने जवन बयाववा माटे जजुमी रहा छे... हज आजे ज अेक इन्टरव्यूमां में आ वात कही. साव नानकडी हती त्यारथी मने अेवुं लागनुं रहनुं छे के आ देश तीव्रताथी बे नही त्रण विभागमां वर्डयाथेलो छे. पडेलो विभाग अमीरोनो छे, जे आभा देशमां क्यांय पण वसे अेक सरपी ज़िंदगी छवे छे. अेमनी पासे सगवओ छे, मोटरो छे, सुभ-सगवडना साधनो छे... बीअे विभाग गरीबोनो छे, अे पण देशमां क्यांय पण वसे अेक सरपी ज़िंदगी छवे छे. अभाव, संघर्ष अने पूरी मडेनत करवा छतां ज़िंदगीनी भूणभूत ज़रूरियातो पण पूरी न थवानी इरियाड साथे अेमनी अेक पछी अेक पेडी जन्मे छे, जवे छे अने मृत्यु पामे छे. त्रीअे हिस्सो आदिवासीओनो छे, जेमने आ बढलाती दुनिया साथे सांकेयनो प्रयास कोर करतुं नथी, कारण के आपणे बधा ज ज़ाणेअज़ाणे अेनुं छच्छीअे छीअे के, अे लोको आगण न वधे, स्वतंत्र न थय, आणवड, अभाए अने दबायेलो ज रहे !

हुं आभी ज़िंदगी आ त्रीअे हिस्सा, आदिवासीओना अडेतर जवन माटे संघर्ष करती रही. लगभग १०० नवलकथाओ अने टूंडी वार्ताओना २० संअडो साथे में अंगणी भाषामां भरपूर लभाए आ देशना साहित्यमां उमेर्युं छे. अनेक भाषाओमां मारा पुस्तको, टूंडीवार्ताओ अने लेपोनो अनुवाद थयो. ज्ञानपीठ, पद्मविभूषण अने मारा साहित्य माटे नोबेल प्राइज माटे नोमिनेट थवा छतां आजे ज़िंदगीना ८० वर्ष पछी हुं मारी ज़ातने ज्यां ज़ेउं हुं त्यां मने अेटलुं योक्स समजथ छे के मारे मारा आदिवासी भाई-अडेनो माटे जे करवानुं हतुं अे हुं पूरी रीते, सङ्गतापूर्वक करी शकी नथी.

माहुं लेभन सतत ख्यामां रहनुं, कारण के में मारा मोटाभागना लेभनने अंगणना सांथाल अने बीअे आदिवासीओनी कथाओ साथे वरणी लीधुं. शडेरोमां वसता मोटाभागना लोको समजता के ज़ाणता नथी, परंतु जंगलोमां वसता आदिवासीओ आजे पण जमीनदररो अने इरिस्ट ओडिसर्स, पोलीस अने शिकारीओना अत्याचारनो भोग बने छे. आमां मात्र जंगल कापनुं, प्राणीओने मारवा, वनपेदाशो लूटी लेवा जेवा नाना गुना नथी. अही, शडेरथी माठीलो दूर जन्मां पडेलुं जो लीस स्टेशन पण

पांय डिजोमीटर दूर होय त्यां अणकार, जवनभर मजूरी करवा माटे माणसनुं भरीद-वेयाए अने अमानुपी वर्तनना अनेक डिस्सा अवारनवार बनता रहे छे. आपणे नवाई लागे, के भारतनी आजादी

पछीना साडा छ दायका वित्या छतां, आदिवासीओ माटे अवाज उठावनार लोकोने अंगण अने छतीसगढ जेवा राज्यांमां 'नकसलाईट' क हीनो पुवलेआम गोणी मारी देवामां आवे छे, तेम छतां अे विशे कोर क्युं करतुं नथी.

मारी अेक अनुसुचित टूंडी वार्ता अने अेना उपरथी सर्जियलुं आंतरराष्ट्रीय भ्याति पामेनुं नाटक 'द्रौपदी' आजे पण ज़ुडी ज़ुडी भाषाओमां भारतना अनेक ओडिओरियन्समां लभवाय छे. दुबाना नामना अेक आदिवासीनी पत्नी द्रौपदी मेहन, अेना पतिना मृत्यु पछी जमीनदररो सामेनी लडाईनी आगेवानी करे छे. दुष्काणना समयमां ट्युबवेल अने कूवाओ पर कभ्रो करीने भेडेला जमीनदररो आ आदिवासीओ पासेथी मङ्गतां काम करावे छे, अेमनी पत्नीओने पराणे अेमनी पथारी गरम करवी पडे छे... द्रौपदी अनेक जमीनदररोने मोतना मोढामां पडोयाडे छे, परंतु अंते पडाय छे. अेना उपर अनेक पोलीस ओडिसर्स वारवार

बणाकार करे छे. छेले, अेने ज्यारे सेमानाचकनी सामे रज करवामां आवे छे त्यारे द्रौपदी विवख दशमां अेनी सामे लिपी रहे छे अने कडे छे, “अही कोरनी शरम राभवानी ज़रू नथी, कारण के अही कोर मड छे ज नही !”

मारी नवलकथा, 'उज़ार योरासी की मा पण अनुसुचित नवलकथा पुरवार थई. मारी नाभवामां आवेला अेक केहीनो नंबर अेक उज़ार थोयासी छे... अेना मृत्यु पछी अेनी वाशने जेवा आवेली अेनी मा विशेनी आ कथा हदय धूअणी नापे अेवी छे, जया अरयन अभिनीत, गोविंद निहलानी दिग्दर्शित अे डिस्मने १८८८मां नेशनल अेवार्ड मण्यो... आ

बधा अेवार्ड अने सन्माननो कोर अर्थ नथी, कारण के जंगलमां वसता छतीसगढ अने अंगणना आदिवासीओ सिवाय बाकीना शडेरी लोको माटे तो आ 'वार्ताओ' अथवा 'डिस्मो' छे. अडार नीकणीने भूली जवा सिवाय अेमने कोर रस नथी !

आदिवासीओ माटे काम करवुं अे माहुं निश्चित ध्येय नहोतुं. लभवुं मने गमतुं. अमारा घरमां साहित्यनुं वातावरण हतुं. मारा पिता मनिष घटक ज़ाणतीना कवि अने नवलकथाकार हता. मारी मा धरिनि देवी पण अेक लेखक अने सामाजिक कार्यकर्ता हती. मारा मामा सचिन यौधरी भारतमां ईकोनोमिकल अने पोलिटिकल विकलीना इंडर तंत्री हता. मारा बीअे मामा शंभ यौधरी भूष ज़ाणतीना शिल्पकार हता. मारा काका ऋत्विक् घटक डिस्मोना दिग्दर्शक हता.

अेमणे बनावेली डिस्मो आजे पण भारतीय डिस्मोना इतिहास अने डिस्म मेकिंग शीषण मागता विद्यार्थी माटे अेक माठीलस्टोन गणाय छे. मारो उठेर भूष स्वतंत्रता अने समजण साथे करवामां आय्यो छे. मने जे करवुं होय ते करवानी छूट हती... १४थी जन्मजुआरी (उत्तरायण), १८२६ना दिवसे ब्रिटिश इन्डियाना ढाकामां मारो जन्म थयो हतो जे हवे बांग्लादेशमां छे. शङ्कातमां मने अेडन मोन्टेसरी स्कूलमां मूकवामां आवी. अे पछी ब्रिस्ती मिशनरी द्वारा खलाववामां आवती कोन्वेंट शाळामां हुं थोडां वर्ष लभणी. मारा काका अने मामाओने लायुं के, कोन्वेंटमां लभणीने मारी मानसिकता भारत विरोधी अने ब्रिटिश तरडी थवा लागी छे. अुड मजानी वात अे छे के मारा घरमां अे विशे सडुअे भेगा मणीने मुदला हिले ख्यां करी... मने अमुक प्रश्नो पूछ्या, जना विशे मारा विचारो के मान्यताने सडुअे समजवानी प्रयास क्यो. अंते, मारा परिवारे साथे मणीने मने शांतिनिकेतन मोडलवानुं नकी कयुं. १८३६थी १८३८... शांतिनिकेतनमां में वितावेलो समय मारा जवननो उत्तम समय छे, अेम कहुं तो भोहुं नथी. 'शांतिनिकेतन'मां हुं गुडुदेव टागोरने पडेलीवार मणी. अेमणे मारा विचारोने अेक नवो आकार आय्यो. ब्रिटिश मिशनरी शाळामां अंग्रेज अने अंग्रेज लुकूम विशेनो जे अहोभाव मारा मनमां हतो अने भूडीने गुडुदेवे मने अेक नवा भारतनी ओणभ करवी. अंगणना आदिवासी गामोनी मुलाकात दरमियान मने अेक साया भारतनी, जंगलोमां, पर्वतो पर अने अजवाणा वगरना प्रदेशमां वसता ज़ुदा ज भारतनी ओणभ थई. अे पछी मने भेलताला गर्ल्स स्कूलमां दाभल करवामां आवी. १८४४मां हुं ग्रेज्युअेट थई. अे पछी मारो पडेलो निर्णय गुडुदेव टागोर साथे विश्वभारती युनिवर्सिटीमां ज़ोडवानो हतो. त्यांथी में भी. अने अेम.अे.नी डिग्री लीधी. गुडुदेव रवीन्द्रनाथ टागोरना विचारोनो मारा पर आजे पण उडो प्रभाव छे...

१८५६मां 'जंसीनी राणी' (अंगणीमां) मारी पडेली नवलकथा प्रकाशित थई. लक्ष्मीबाईना जवनमां में ज़ुडी ज रीते उडियुं करवानो प्रयास क्यो हतो. अे नवलकथाने सारो प्रतिसाद मण्यो. नवलकथा पछी में लभवानुं यालु राभ्युं. मारी टूंडी वार्ताओ अने नवलकथाओ प्रकाशित थतां रहमां. वीस-बावीस वर्ष सुधी में जे कंड लभ्युं अेमां मारा शांतिनिकेतनना उठेर अने अंगणमां वितावेलो दिवसोनी असर देपाती हती. स्त्रीओनो संघर्ष, आत्मगौरव माटेनी अेमनी लडाई अने भारतना स्वातंत्र्य संग्राम दरमियान, भागला दरमियान अनेली अनेक घटनाओ उपर आधारित मारी नवलकथाओ अने टूंडी वार्ताओमां क्यडायेला, पीडित, शोषित वर्ग, अेमनी समस्याओ, अेमनी अधूरप अने अेमने थता अन्यायनी कथाओ पडवाती रही.

१८७७मां मारी नवलकथा 'अरण्ये' (जुओ पानुं ६) ►►

आ ऋतुमां भाधपदार्थ पधारो अने गुणवत्ता पधारो



आजे उतराण छे. सरस मजना सुसवाटा मारता पवनमां धण लोको नडी के सागर स्नान करशे, युवानो, भास करीने गुजराती युवानो पतंग पण यगवशे. शियाणानी आ मोसममां शरीरने गरमी आपता तलना लाडु तो पाअे ज छीअे, आ उपरांत तेलमां वधारेली बीअे-वस्तुओ भावानी अेमणे आदत पाडवी ज़ोअे. भोराकने गरम करीने भातां शीष्या अेममां आपणे भोराकने भाइवानी, तणवानी अने वधारवानी क्रियाओ पण शोधी. ज़ेके, अही आपणे वात करवी छे वधारनी.

शियाणामां भाइली वस्तुओ भावाथी वायुकारक दहो वधु वकरे छे. बीअे वायु तणेली बीअे वधु भावाथी शरीरनी यरपी वधे छे, माणस हदयसंघर्षी बीमारीओ, ब्लडप्रेशर के रायाबिटीअना अरडामां पण इस्ल शके छे. आ संज्ञेओमां वधारवानी क्रिया उत्तम बनी रहे छे, कारण के तेमां शरीरने वधु प्रमाणामां तेल नथी मणतुं. ज़रूरियात पूरती ज यरपी मणे छे अने भाधपदार्थोनो स्वाद पण वधी थय छे.

कोरा ममरा भावा करतां वधारेला ममरा भावाथी स्वाद पण मणे छे, वायुकारक पण नथी बनी रहेता अने शरीरने ज़ोअती उणवता तेम ज यरपी आ वधार माटे वधारेला तेलमांथी मणी रहे छे. आ ज रीते भाइलां कडोण, मुडियां, ढोकणां, पात्रां, भमण, भांडवी के छडली भावाथी वायुकारक बनी शके छे, परंतु अे ज बीअेने वधारी लेवाथी स्वाद अने स्वास्थ बेउ जणवाय छे.

शियाणामां डंडीने लीधे धणने विविध सांधाओना दुभावा सतावता होय छे. आवा समये तेलनी मालिश के तैलीय बीअे शरीरमां थय अे पण ज़रुरी छे जे वायुनो नाश करी शके, परंतु अेक तणेली बीअे भावाथी जेटलुं तेल शरीरमां थय अेना करतां वधारेली बीअे भावाथी प्रमाणामां धणुं अने शरीरने ज़ोअतुं ज तेल अंडर थय छे. जेथी यरपी के स्थणता वधारवानो प्रश्न ज लिभो थतो नथी.

गुडिणीओने तो प्रश्न सतावतो होय छे के रोटली वधी पडे तो शुं करवुं? तेने शोकीने भाभरा बनावी शकय, परंतु जेमने याववानी समस्या होय अेवा सिनियर सिटिजन्सने नास्ताना समयमां रोटलीओ वधारीने आपी होय तो यावी पण शकय अने अनेरी लिज्जत पण आवे.

साये ज वधारवानी क्रिया अरेअर भाधपदार्थोनो गुणवत्ता अने स्वाद वधारी भूके छे. तो डंडीना दिवसोमां वधारवानी क्रियाने भूलशो नही.